कथा क्रम

जुलाई–सितम्बर 2023
मूल्य – ₹ 40

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

पुस्तकें मिली

1.	वो फोन कॉल	वंदना बाजपेयी	कहानी संग्रह	भावना प्रकाशन पटपड़गंज गांव दिल्ली
2.	विसर्जन	वंदना बाजपेयी	कहानी संग्रह	ए.पी.एन.पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
3.	शाहीन बाग लोकतन्त्र की नई करवट	भाषा सिंह	'' ''	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
4.	पुद्दन कथा	देवेश	कहानी संग्रह	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
5.	अमर देसवा	प्रवीण कुमार	'' ''	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
6.	माया ने घुमायो	मृणाल पाण्डेय	'' ''	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
7.	धवई के फूल	दयाल राम	'' ''	दिशा इन्टरनेशनल पब्लिंशिंग हाउस
8.	आड़ा वक्त	राजनारायण बोहरे	उपन्यास	लिटिल बर्ड पबिल्केशन्स
9.	ताजमहल के आंसू	सुनील विक्रम सिंह	उपन्यास	लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज
10.	आधे सफर का हमसफर	शहादत	कहानी संग्रह	हिंद युग्म, नोएडा उ.प्र.
11.	अजेय यशोधरा	डॉ. जयप्रकाश तिवारी		ए-5, गायत्री नगर (इन्दिरा नगर) लखनऊ
12.	दातापीर	हृषीकेश सुलभ	उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली
13.	हद बेहद	केशव	'' ''	'' '' '' ''
14.	नबीला	सारा राय	कहानी संग्रह	'' '' '' '' '' '' '' ''
15.	नमस्ते समथर	मैत्रेयी पुष्पा	उपन्यास	'' '' '' '' '' '' '' ''
16.	टी आर पी	डॉ. मुकेश कुमार		
17.	सावरकाल काला पानी और उसके बाद	अशोक कुमार पांडेय		'' '' '' '' '' ''
18.	लालटेनगंज	अखलाक अहमद जई	कहानी संग्रह	
19.	गँड़ासा गुरू की शपथ	कुन्दन यादव	कहानी संग्रह	राजकमल प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली
20.	मैंने जो जिया-जिया किस राह से गुजरा हूं	उद्भ्रात	आत्मकथा	अमन प्रकाशन, कानपुर
21.	कर्बला दर कर्बला	गौरीनाथ	उपन्यास	अंकिता प्रकाशन सी-56, शालीमार गार्डेन एक्सटेंशन द्वितीय गाजियाबाद
22.	शहर से दस किलोमीटर	नीलेश रघुवंशी	उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली
23.	हिन्दी अन्तर्वस्तु का शिल्प कहानी	राहुल सिंह	आलोचना	'' '' '' '' '' '' '' ''
24.	महाविद्यालय	विनोद कुमार शुक्ल	कहानी संग्रह	'' '' '' '' '' '' '' ''
25.	अच्छा आदमी	पंकज मित्र	कहानी संग्रह	'' '' '' '' '' '' '' ''
26.	आवाजें कांपती रहीं	अनघ शर्मा	कहानी संग्रह	'' '' '' '' '' '' ''
27.	तितली धूल	भालचन्द्र जोशी	कहानी संग्रह	'' '' '' '' '' '' '' ''
28.	अल्फा बीटा गामा	नासिरा शर्मा	उपन्यास	लोकभारती प्रकाशन एम.जी.एच. मार्ग, प्रयागराज
29.	स्वप्न प्रेमी	रमिता गुरव		राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली
30.	आंधारी	प्रभात रंजन		राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली
31.	ढलती सांझ का सूरज	मधु कांकरिया	उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली
32.	सर्दियों का नीला आकाश	जयशंकर	उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली
33.	राष्ट्रनिर्माताओं की पत्रकारिता	कृपाशंकर चौबे		प्रलेक प्रकाशन, महाराष्ट्र
34.	कोरोना के दौरान	अंजु रंजन	उपन्यास	प्रलेक प्रकाशन, महाराष्ट्र
35.	भीड़ और भेड़िए	धर्मपाल महेन्द्र जैन	व्यंग्य	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
36.	कांच के घर	हंसा दीप	उपन्यास	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
37.	देवभूमि डेवलपर्स	नवीन जोशी	उपन्यास	हिंदयुग्म सी-31 नोएडा उ.प्र.
38.	मूकनायक के सौ साल और और अस्मिता संघर्ष के सवाल	डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन	वैचारिक	एडेडमिक पब्लिकेशन्स, सोनिया विहार दिल्ली
39.	घूंघट पट	ऋचापाठक	उपन्यास	सूर्य प्रकाश मन्दिर, बीकानेर

ISSN-2231-2161

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 25 अंक : 97

जुलाई–सितम्बर 2023

(केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा से सहयोग प्राप्त)

कहानियां

16 **शिवकुमार यादव** : दस्तावेज
20 **उर्मिला शिरीष** : ब्रेकअप
29 **राजा सिंह** : एक क़तरा सुख
40 **सुधा त्रिवेदी** : तलेसरा के बेटे
58 **अर्चना गौतम मीरा** : रूया
63 **सन्दीप तोमर** : तुम आओगे न
69 **ऋतु त्यागी** : सप्ताह का एक दिन

लघुकथाएं

39 **भगवती प्रसाद द्विवेदी** : प्रणय
44 **अमरीक सिंह दीप** : विवेक
50 **अशोक गुजराती** : चाल
72 **भगवती प्रसाद द्विवेदी** : उम्मीद की परवरिश

कथा नेपथ्य

05 **मधुरेश** : 'अधूरी क्रान्ति की महागाथा' अर्थात् 1857 का अमर सेनानी 'क्रान्तिनायक अज़ीमुल्ला ख़ां'

लेख

45 **श्रवण कुमार गुप्त** : चिपक रहा है बदन पर लहू से पैरहन
51 **कंवल भारती** : रजत रानी मीनू की कहानियां

कविताएं

73 **राजेन्द्र नागदेव** : महानगर का आदमी, अन्तिम दिनों में, उसकी पगडंडियां
74 **कविता विकास** : संक्रमण, अलकनंदा तुम बहती जाना,
75 **एस.आर.हरनोट** : वह लड़की, तुम्हें किसने कहा चिट्ठियां लिखो.... ?
77 **प्रशान्त बेवर** : तबादला
77 **नीरज नीरव** : सभ्यता का अंत
78 **कल्याणमय आनन्द** : शब्द

यात्रा-वृत्तांत

79 **मनीषा कुलश्रेष्ठ** : एक दोपहर : युवा कवि कीट्स और बाबा फ्रॉयड के साथ

कथा शोध

86 **पूजा यादव** : युद्ध और आंतक के बरअक्स यातनाओं से घिरा स्त्री जीवन

समीक्षाएं

91 **रजनी गुप्त** : पल्लीपार का दर्द औरउस पार की दुश्वारियां (उपन्यास : शीला रोहेकर)
93 **हरि राम मीणा** : सांप घुमंतू समुदायों पर लिखा गया एक आधिकारिक उपन्यास (उपन्यास : रत्नकुमार सांभरिया)
95 **सूरज पालीवाल** : स्त्री दुख का विपुल संसार : सुखी घर सोसाइटी (उपन्यास: विनोद दास)
99 **चन्दा सागर** : अनदेखे भारत का जीवंत दस्तावेज 'एक देश बारह दुनिया' (रिपोतार्ज : शिरीष खरे)
102 **साधना अग्रवाल** : स्त्रियों की व्यथा-कथा (उपन्यास : रंजन बंद्योपाध्याय)
2 **सम्पादकीय** : सीमावर्ती क्षेत्रों में सियासी खिलवाड़
आवरण : **बंसीलाल परमार**
रेखाचित्र : **राजेन्द्र परदेसी**

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन सहयोग
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी–107, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 40 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक–450 ₹, आजीवन 3000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक–200 ₹, त्रैवार्षिक–550 ₹, आजीवन 3500 ₹
(SBI kathakramA/n10059002392 IFSC- SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.–देवा रोड, चिनहट, लखनऊ–226019

सीमावर्ती क्षेत्रों में सियासी खिलवाड़

भारत जैसे विशाल देश के एक छोटे से राज्य की एक जघन्य, क्रूर और पाश्विक घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया है। हम स्तब्ध हैं। बेहद दर्द और यंत्रणा से व किसी हद तक अविश्वास से ऐसी नृशंस घटना तथा उसके बाद के परिदृश्य पर सोचने पर विवश हो जाते हैं। गांव और आसपास के रहने वालों की लगभग साठ हजार की उन्मादी भीड़ जिनके संगसाथ ही वे स्त्रियां पली बड़ी थीं, के बीच बलात्कार और नग्नावस्था में उन अबलाओं की सार्वजनिक परेड और हत्या...।

ऐसा नहीं है कि इस तरह की घटना यानी निर्वस्त्र महिला का सार्वजनिक प्रदर्शन पहली बार घटित हुआ है। मुझे अपने प्रदेश की ही दो, तीन घटनाओं की जानकारी है। पर वे घटनाएं प्रभुत्व व वर्चस्व के संघर्ष की दुखद और लज्जाजनक परिणति थीं जिनका शिकार दलित, वंचित और निचले वर्ग के गरीब गुरबा बनते हैं।

मणिपुर की घटना इनसे भिन्न और बेहद गंभीर व दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके पीछे राज्य और काफी हद तक उत्तरपूर्व क्षेत्र की घिनौनी सियासत है, दो शत्रु समूहों में बंटा समाज है, पुलिस प्रशासन की मिलीभगत और अकर्मण्यता है और मुख्य मंत्री व जनप्रतिनिधियों की अक्षमता के साथ समुदाय विशेष के साथ उनकी पक्षधरता है। यह कतई स्वीकार्य नहीं है कि पिछले लगभग तीन महीने से हत्या, हिंसा, आगजनी, लूटपाट और दुराचार की घटनाएं लगातार जारी हैं और पुलिस प्रशासन तथा राजनीतिक समाज वस्तुतः हाथ पर हाथ धरे बैठा है। और यह वो समाज और क्षेत्र है जो इस तरह की हिंसा और अराजकता के लिए पहले नहीं जाना जाता था। अलबत्ता पिछले कुछ सालों में एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रायोजित पलायन, राजनीतिक दलों द्वारा कुछ समुदाओं को संरक्षण आदि वजहों से यदाकदा स्थिति बिगड़ती रही है।

पर मणिपुर की वर्तमान दशा बेहद शोचनीय है। सीमावर्ती राज्यों की कुछ अप्रत्यक्ष भूमिका के बावजूद यह राज्य की आंतरिक समस्या है। घटनाओं का लगातार जारी रहना हमें सोचने पर विवश करता है कि आखिर इसकी वजह क्या है। हमने उत्तर प्रदेश में भीषण साम्प्रदायिक दंगे और 1984 के सिक्खों के विरुद्ध हिंसा और लूटपाट का दौर देखा है। मेरठ के 1982 के दंगों में तो मैं वहीं तैनात था और 1987 के दंगे और कुख्यात मलियाना कांड के दौरान भी मैं मेरठ में ही सतर्कता विभाग का पुलिस अधीक्षक था, इसलिए समस्त घटनाक्रम मेरी जानकारी और आंखों के सामने था। 1984 के सिख विरोधी दंगे के दौरान मैं देहरादून में पुलिस अधीक्षक था। एकाध अपवादों को छोड़ कर ज्यादातर दंगे हफ्ते, दस दिन में नियंत्रण में आ जाते हैं। 1982 का शाहगासा दंगा और 1987 का मलियाना कांड दो तीन सप्ताह चला जरूर था पर उसकी इंटेन्सिटी दस दिन बाद ही कम हो गई थी। यही स्थिति 1984 के सिख विरोधी दंगों की थी। और अगर मैं कहूं कि इतने दिन भी चलने के पीछे प्रशासन की संलिप्तता न भी कहें तो भी कुछ ढिलाई तो लक्षित की जा सकती थी जिसमें राजनीतिक हस्तक्षेप या पक्षधरता अथवा किसी समूह के प्रति दुराभाव या दुराग्रह स्पष्ट था। मेरे लिए यह अकल्पनीय है कि कोई कानून व्यवस्था लंबे समय तक अनियंत्रित रहे यदि प्रशासन बिना किसी भेदभाव या पक्षपात के पूरी सख्ती से उस पर काबू करने का प्रयास करे। प्रशासन कभी इतना असहाय अथवा अक्षम नहीं होता कि महीनों लोग अपने हाथ में कानून लेकर जिसकी चाहें हत्या कर दें, जिसका चाहें बलात्कार करें या बड़े पैमाने पर लूटपाट, आगजनी करें और आम जन को ऐसे हिंसक